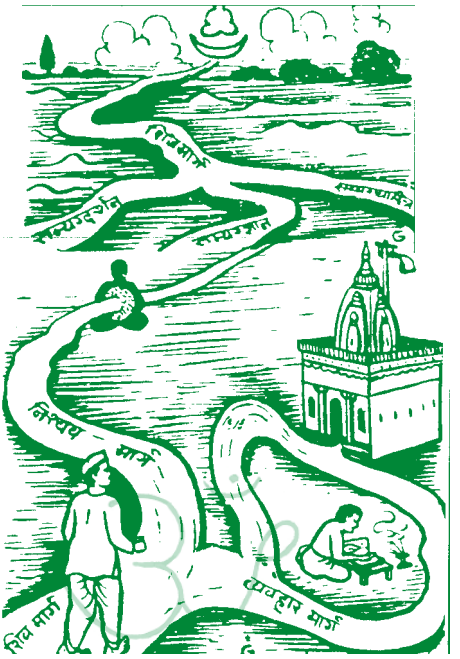

(E - 125) हम तो कबहू न निजघर

हम तो कबहू न निजघर आये,
परघर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये.....टेक

परपद निजपद मानि मगन ह्वै, पर परनति लपटाये,
शुद्ध बुद्ध सुख कंद मनोहर, चेतनभाव न भाये.....१

नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये,
अमल अखंड अतुल अविनाशी, आतमगुन नहि गाये.....२

यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये,
''दौल'' तजो अजहूं विषयनको, सतगुरु वचन सुहाये....३